

औपनिवेशिक और आधुनिक वास्तुकला

प्रलिम्स के लिये:

इंडो-गॉथिक शैली, नव-रोमन शैली, इबेरियन वास्तुकला, पुरानी संसद भवन, गेटवे ऑफ इंडिया, लॉरी बेकर, चार्ल्स कोरिया

मेन्स के लिये:

भारतीय वास्तुकला पर पुर्तगाली प्रभाव, भारतीय वास्तुकला पर फ्राँसीसी प्रभाव, भारतीय वास्तुकला पर ब्रिटिश प्रभाव, स्वतंत्रता के बाद की वास्तुकला, इबेरियन और गोथिक वास्तुकला के बीच अंतर

औपनिवेशिक वास्तुकला:

मुगल साम्राज्य के कमजोर होने पर यूरोपीय उपनिवेशवादी भारत आए, जिससे पुर्तगाली, फ्राँसीसी, डच, डेनशि और ब्रिटिश के बीच सत्ता के लिये संघर्ष शुरू हो गया। यह प्रतियोगिता वर्ष 1947 तक ब्रिटिश शासन के साथ समाप्त हो गई। अपने प्रभुत्व के साथ-साथ यूरोपीय लोगों ने अपनी नरिमति इमारतों में प्रतबिंबित होने वाली विविध स्थापत्य शैली प्रस्तुत की।

भारतीय वास्तुकला पर पुर्तगाली प्रभाव क्या है?

- पुर्तगाली अपने साथ वास्तुकला की 'आईबेरियाई शैली' साथ लाये। उन्होंने शुरुआत में व्यापारिक चौकियाँ और गोदाम बनाए, बाद में उन्हें समुद्र तट के किनारे कलिबंद शहरों में बदल दिया गया।
- उन्होंने चर्च की ताकत को व्यक्त करने के लिये यूरोप में 16वीं शताब्दी के अंत में विकसित 'घरों के आँगन (Patio Houses)', यह प्रायः नमिनवर्गीय हड्डियों के घरों के आँगन में स्थिति मटिटी की दीवार वाली फूस की झोपड़ी होती है, और 'बरोक शैली' की अवधारणा भी प्रस्तुत की।
 - नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करने के लिये इसमें व्यापक, वस्तुतः और नाटकीय डिज़ाइन था। इसमें विपरीत रंगों का उपयोग शामिल था।

चर्च	स्थान	शैली	नरिमाण वर्ष	उल्लेखनीय विशेषताएँ
सेंट केथेड्रल	गोवा	पुर्तगाली लेट-गॉथिक	1619 ई.	इसमें एक बड़ी घंटी है जिसे "गोल्डन बेल" कहा जाता है।
बेसलिका ऑफ बॉम जीसस (पवतिर यीशु)	गोवा	बरोक	1604 ई.	इसमें विश्व धरोहर स्थल सेंट फ्राँसिस जेवियर का शव (Body) शामिल है।
सेंट पॉल चर्च	दीव	बरोक	1610 ई.	द्वीप पर सबसे बड़ा पुर्तगाली कैथोलिक चर्च।
सेंट ऐनी का चर्च	तलौलीम, गोवा	बरोक	1695 ई.	इसे भारतीय बारोक शैली की उत्कृष्ट कृतिके रूप में तैयार किया गया है।

कलि	स्थान	नरिमाण वर्ष	उल्लेखनीय विशेषताएँ
अगुआंडा कैसल (बांद्रा कलि)	मुंबई	1640 ई.	अरब सागर और माहिम द्वीप की ओर देखने वाला वॉचटावर।
दीव कलि	दीव द्वीप	1535 ई.	लाइटहाउस, दीवारों पर तोपें और अंदर तीन चर्च (सेंट थॉमस चर्च, सेंट पॉल चर्च, चर्च ऑफ सेंट फ्राँसिस ऑफ असीसी)।



भारतीय वास्तुकला पर फ्राँसीसी प्रभाव क्या है?

- फ्राँसीसी अपने साथ शहरी नगर नियोजन की अवधारणा लेकर आए। पुदुचेरी और चंद्रनगर (अब चंदननगर, पश्चिम बंगाल) के फ्राँसीसी शहर कार्टेशियन ग्रिड योजनाओं और वैज्ञानिक वास्तुशिल्प डिज़ाइनों का उपयोग करके बनाए गए थे।
- उन्होंने शक्ति प्रदर्शन के तौर पर भव्य इमारतें बनाईं। उन्होंने गुमनाम वास्तुकला की अवधारणा भी पेश की जिसमें आधुनिक इमारतों की तरह, बर्ना अधिक अलंकरण या डिज़ाइन के एक साधारण मुखौटा शामिल है।
- फ्राँसीसीसियों ने माहे (केरल), कराईकल (तमलिनाडु) और यानम (आंध्र प्रदेश) के तटीय शहरों का भी विकास किया।



भारतीय वास्तुकला पर ब्रिटिश प्रभाव क्या है?

परिचय:

- अंग्रेजों ने वास्तुकला की गॉथिक शैली की शुरुआत की। इसका भारतीय वास्तुकला के साथ विलय हो गया और परिणामस्वरूप **वास्तुकला की इंडो-गॉथिक शैली** सामने आई।
 - वर्ष 1911 के बाद, वास्तुकला की एक नई शैली उभरी जिसे **नव-रोमन वास्तुकला** के नाम से जाना जाता है।

इंडो-गॉथिक शैली:

- इसे **विक्टोरियन शैली** के रूप में भी जाना जाता है, यह वास्तुकला की भारतीय, फारसी और गॉथिक शैलियों का एक अनूठा मशिरण था। इंडो-गॉथिक शैली की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

विशेषताएँ	विवरण
वशाल और वसित्त	नरिमाण भव्य और जटलि रूप से वसित्त थे।
पतली दीवारें	इंडो-इस्लामिक नरिमाण की तुलना में दीवारें पतली हैं।
नुकीले मेहराब	मेहराबों के आकार नुकीले थे, जो इंडो-इस्लामिक घुमावदार मेहराबों से भिन्न थे।
बडी खडिकियाँ	विक्टोरियन शैली में वशाल खडिकियों का उपयोग शामिल था।
करोस पर आधारति ग्राउंड प्लान	घर्च अकसर करोस-आकार (करोसफॉर्म) ग्राउंड प्लान का पालन करते थे।
उन्नत संरचनात्मक डिजाइन	अकसर ब्रिटन से आए उन्नत इंजीनियरिंग मानकों का पालन कथिा जाता है।
आधुनिक सामग्रियों का उपयोग	नरिमाण में स्टील , लोहा और कंक्रीट का परिचय।
उदाहरण	कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल, मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया आदि।



इबेरयिन और गॉथिक वास्तुकला के बीच अंतर:

आधार	इबेरयिन वास्तुकला	गोथिक वास्तुशिल्प
उपयोग की गई सामग्री	पुरतगालियों द्वारा प्रयुक्त मुख्य आवश्यक सामग्री ईंट थी। छतों और सीढ़ियों के लिये लकड़ी का उपयोग किया जाता था।	मुख्य रूप से लाल बलुआ पत्थर और मोटे चूना पत्थर का उपयोग किया जाता था।
संरचनात्मक विधिताएँ	पुरतगालियों ने अपनी पश्चिमी परंपराओं को जारी रखा और कोई संरचनात्मक बदलाव नहीं किया।	अंग्रेजों ने भारतीय रूपांकनों और शैलियों को अपनाया, जिससे वास्तुकला की इंडो-गॉथिक शैली को जन्म मिला।

■ नव-रोमन शैली:

- वर्ष 1911 के बाद ब्रिटिश राज द्वारा किये गए निर्माण **नव-रोमन शैली** या नयोक्लासिकल शैली के अनुसार किये गए थे।
- एडविन लुटयिंस और हरबर्ट बेकर द्वारा बनाई गई नई दिल्ली की वास्तुकला इस शैली का सबसे अच्छा उदाहरण थी। इसे अक्सर **"हदुस्तान के रोम"** के रूप में वर्णित किया गया है। इस चरण की विशेषताएँ हैं:
 - निर्माण गुमनाम थे और बिना किसी दलिचस्प विशेषता के थे।
 - यह वास्तुकला की सभी शैलियों का संगम था जसिने इस शैली को भीड़भाड़ वाला बना दिया और कलात्मक अभिव्यक्तिकी जगह को सीमति कर दिया।
 - निर्माण की मश्रति प्रकृता के कारण सादगी, आधुनिकता और उपयोगिता अत्यधिक प्रतबिद्ध थी।
 - गोलाकार इमारतों पर ध्यान था।
 - पश्चिमी वास्तुशिल्प डिजाइनों को साकार करने के लिये प्राच्य रूपांकनों का अत्यधिक उपयोग किया गया।
 - उलटे गुंबद की अवधारणा, जैसा कि सर्वोच्च न्यायालय और राष्ट्रपति भवन (पुरानी संसद भवन) के शीर्ष पर देखा जा सकता है, इस चरण के दौरान प्रस्तुत की गई थी।



??????/?????????? ?? ??? ?? ???????????:

■ परचिय:

- वर्ष 1947 के बाद वास्तुकला के दो स्कूल उभरे - **रविाइवलसिट और मॉडर्नसिट**। हालाँकि दोनों स्कूल औपनिवेशिक प्रभाव से अलग नहीं हो सके। इससे भारत की स्थापत्य परंपराओं के स्तर में गरिावट आई है।
 - उदाहरण के लिये पंजाब सरकार ने **चंडीगढ़ शहर को डिजाइन करने** हेतु एक फ्राँसीसी वास्तुकार ले कोरबुसीयर को नियुक्त किया।

स्वतंत्रता के बाद की वास्तुकला की कुछ उल्लेखनीय हस्तियाँ:

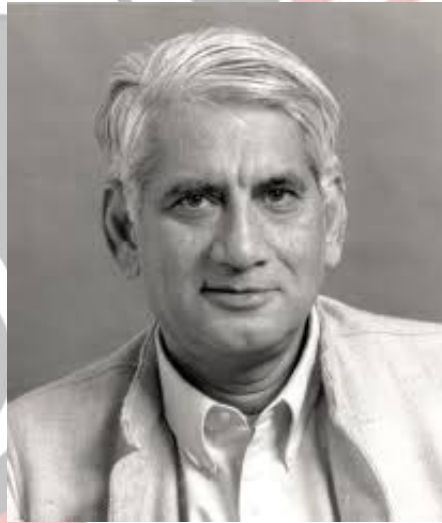
■ लॉरी बेकर:

- "गरीबों के वास्तुकार (Architect of the Poor)" के रूप में जाने जाने वाले लॉरी बेकर (Laurie Baker) केरल में क्रांतिकारी सामूहिक आवास अवधारणा के लिये ज़िम्मेदार थे।
- वर्ष 2006 में, उन्हें वास्तुकला के **नोबेल पुरस्कार** कहे जाने वाले **प्रतिज्ञकर पुरस्कार (Pritzker Prize)** के लिये नामति किया गया था। इसकी स्थापत्य शैली की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं:
 - स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके पर्यावरण-अनुकूल भवनों का निर्माण।
 - स्टील और सीमेंट की खपत को कम करने के लिये फलिर सलैब निर्माण की अवधारणा प्रस्तुत की गई।
 - उन्होंने **वेंटलेशन और तापीय आराम व्यवस्था (Thermal Comfort Arrangements)** पर भी बल दिया।



■ चार्ल्स कोरिया:

- उन्हें शहरी वास्तुकला और स्थानिक योजना में उनके काम के लिये जाना जाता है।
- मैंने स्थानीय संवेदनाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप **आधुनिक वास्तुशिल्प सिद्धांतों को अपनाया** है।
- उन्होंने मध्य प्रदेश विधानसभा भवन, अहमदाबाद में महात्मा गांधी मेमोरियल संग्रहालय, LIC भवन, दिल्ली में कर्नॉट प्लेस आदि जैसी **इमारतों को डिज़ाइन** किया है।
- उन्हें वर्ष 2006 में **पद्म विभूषण** से सम्मानति किया गया।



नष्कर्ष:

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रागैतिहासिक काल से, कला एवं वास्तुकला ने भारत के लोगों के जीवन और अवकाश के समय को बेहतर बनाने में एक अनूठी अभिव्यक्ति पाई है। यूनानी, अरब, फारसी व यूरोपीय सभी ने इन परंपराओं पर अपनी छाप छोड़ी है, जो आज भारतीय कला और वास्तुकला की समृद्ध टेपेस्ट्री में योगदान दे रहे हैं।